पत्रक : AH/01/25 वर्ष : 2025 KVK, Godda

भाकृअनुप
ICAR

जी० डी० टी०- कृषि विज्ञान केन्द्र
चकेश्वरी फार्म, गोड्डा (झारखण्ड)- 814133
मो०- 09304603506

डा० सतीश कुमार (विशेषज्ञ- पशुपालन)
डा० रवि शंकर (कार्यक्रम समन्वयक)

निकरा प्रायोजित

सूकर पालन की विकसित प्रणाली

समस्त पालतू पशुओं में साधारण आहार को मॉस के रूप में बदलने की अत्याधिक क्षमता केवल सूकर में होती हैं यह कम समय में अत्यधिक बच्चों को जन्म देने और अधिक शारीरिक बढ़ोत्तरी करने वाला एक मात्र जानवर है। हमारे देश में अधिकतर सूकर देशी नस्ल के हैं जो विदेशी नस्ल जैसे टैमवर्थ, लैन्डरेस, लार्ज व्हाइट योर्कशायर, हैम्पशायर इत्यादि की तुलना में अर्थिक दृष्टिकोण से कम उपयोगी है। इनका औसत उत्पादन कम है। देशी सूकरों की बढ़ोतरी तथा बच्चे देने की क्षमता भी कम है। यहाँ के ग्रामीण वातावरण में विदेशी नस्ल के सूकर को पालने में सूकर पालकों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है जिसके कारण क्रमबद्ध करके स्थानीय वातावरण में पालने हेतु भारतवर्ष में पहली बार सूकर की एक नयी संकर प्रजाति 'टी एंड डी' विकसित की है, जो झारखंड के अलावे अन्य राज्यों में भी काफी लोकप्रिय हो रही है। यह प्रजाति देशी सूकर एवं ब्रिटेन के टैमवर्थ नस्ल के संकरण से विकसित की गयी है। बंगाल को घुघरू संकर प्रजाति भी काफी प्रचलित है तथा इसका विकास तथा प्राप्त आमदनी भी टी० एण्ड डी० के समान है।

T & D सूकर की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :–

1. बनावट : यह नयी प्रजाति देखने में काफी मनमोहक, चमकीले कालें बालों वाली तथा शरीर से काफी सुडौल होती है। इसका शरीर चिकना कान छोटे, खड़े तथा थुथने मध्यम आकार के होते हैं। देशी सूकर के बदले यह ग्रामीण वातावरण में काफी आसानी से पाली जाती हैं एवं इसका शरीरिक विकास एवं बच्चे देने की क्षमता भी तीव्र है।
2. काला रंग : यह एक काले रंग की नस्ल है, फलस्वरूप इसका मॉस उजले सूकर के मॉस की उपेक्षा महंगा एवं आसानी से बिकता है। यह काले रंग का नस्ल है। आदिवासी क्षेत्र में किसान काले रंग के सूकर का मांस अधिक पसन्द करते हैं, फलस्वरूप इसका मांस उजले सूकर की मांस की अपेक्षा महंगा एवं आसानी से बिकता है।
3. बेहतर वृद्धि दर : यह नयी प्रजाति एक वर्ष की उम्र में ग्रामीण क्षेत्रों मे करीब 100 किलो वजन का होता है, जबकि देशी सूकर मात्र करीब 40 किलों वजन का ही हो पाता है।
4. बेहतर प्रजनन क्षमता : देशी सूकरी एक बार में 4 से 7 बच्चे देती है जबकि टी० एण्ड

डी0 8 से 12 बच्चे देती है। यह नयी प्रजाति वर्ष में दो बार बच्चा देती है जबकि देशी सूकरी दो वर्ष में मात्र तीन बार बच्चे देती है। नयी प्रजाति वर्ष में दो बार बच्चा देती है यानि इसका वियान अन्तराल 180 से 190 दिन का होता है जबकि देशी सूकरी का 220 से 230 दिन।

5. बेहतर आहार रूपान्तरण : देशी सूकर एक किलो शारीरिक वृद्धि के लिए इस नयी प्रजाति का तुलना में डेढ़ से दो गुना अधिक दाना मिश्रित खाती है।
6. रोग प्रतिरोधक क्षमता : देशी सूकर में चर्म रोग का प्रकोप काफी होता है, लेकिन नई प्रजाति प्रायः चर्म रोग से मुक्त रहती है और दस्त की बीमारियाँ भी बहुत कम होती है।
7. अनुकूलनशीलता : देशी व विदेशी सूकर के बदले यह प्रजाति ग्रामीण वातावरण में आसानी से पाली जा सकती है।
8. आर्थिक लाभ : देशी की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में ये नई प्रजाति आर्थिक दृष्टिकोण से करीब चार गुणा अधिक लाभकारी है। इस संकर किस्म के एक सूकरी को पालते हुए उनके छौना को 10 से 12 माह में बिक्री कर प्रति वर्ष करीब 60 हजार रूपया का शुद्ध लाभ होता हे जबकि स्थानीय किस्मों से मात्र 5 हजार ही होता है।

इस प्रकार जिनकी सूकर पालन में अभिरूची है, यह नयी किस्म बरदान साबित हो रही है। इस नस्ल के सूकरों को भारतवर्ष के अन्य राज्यों जैसे राष्ट्रीय शोध संस्थान गुवाहाटी (असम), जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (मध्यप्रदेश), राजकीय सूकर प्रजनन प्रक्षेत्र, किदरमकुलाई (मेघालय), कृषि विज्ञान केन्द्र, बाकुरा, (पश्चिम बंगाल) बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची (पशुपालन संकाय) कृषि विज्ञान केन्द्र, पाकुड़, झारखंड एवं **कृषि विज्ञान केन्द्र, गोड्डा (झारखण्ड)** में भी पाला जा रहा हैं। झारखंड तथा बिहार के अनेक जिलों में टी एंड डी नस्ल की सूकर पालन करने वालों किसानों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है परन्तु उन्नत किस्म (टी एंड डी) के मात्र राँची पशु चिकित्सा महाविद्यालय, कॉके द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है अन्यथा पशुपालक बाद में यत्र–तत्र जगह से सूकर खरीदकर नुकसान का भागीदार हो सकते हैं।

सूकर पालन को एक लाभकारी व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिये निम्न बातों पर विशेष ध्यान देनी चाहिए।

1. प्रजनन यानि संकरण हेतु उन्नत नस्ल का प्रयोग
2. पौष्टिक एवं संतुलित आहार की व्यवस्था
3. सूकर आवास की उचित व्यवस्था एवं रख–रखाव के आधुनिक तरीके
4. रोग नियंत्रण की व्यवस्था
5. सूकरों एवं उससे उत्पादित वस्तुओं की समुचित बिक्री की व्यवस्था।

सूकरों के अन्य विदेशी नस्ल निम्न प्रकार के हैं :–

1. **लार्ज हवाइट योर्कशायर** : यह एक उजले रंग का नस्ल है। इसका शरीर लम्बा तथा कान छोटे एवं खड़े होते हैं।
2. **लैन्डरेस** : यह भी उजले रंग का नस्ल है। इसका शरीर लम्बा तथा कान लम्बे एवं आगे की ओर ऑखों के ऊपर कुछ झुके होते हैं।
3. **टैमवर्थ** : इसके शरीर का रंग सुनहला लाल होता है। शरीर लम्बा तथा चौड़ाई कम और कान छोटे तथ खड़े होते है। यह कठोर तथा ताकतवर होता है। यह देशी सूकरों का नस्ल सुधारने के लिये यह एक अच्छी जाति हैं। इसके चमड़े मुलायम हेते हैं तथा चर्म रोग इसे अपेक्षाकृत बहुत कम होता है। इँसी नस्ल के सूकर को देशी सूकरों से संकरण कर राँची पशु चिकित्सा महाविद्यालय, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिको ने भारतवर्ष में पहली बार सूकर की प्रजाति टी0 एण्ड डी0 बिकसित की है।

4. **हेम्पशायर** : इसके शरीर का रंग काला होता है। पर एक उजले रंग की धारी इसके अगले पैर तथा पीठ को घेरती हुई पायी जाती है।
5. **बर्कशायर** : इसके शरीर का रंग काला होता है। इसके चारों पैर नाक और पूँछ की छोर उजले रंग की होती है। इसका शरीर मध्यम आकार का कुछ–कुछ लम्बा तथा पैर छोटे होते हैं।
6. **ड्यूरोक** : इसका रंग भूरा लिये हुए लाल होता है। शरीर लम्बा तथा कान आगे की ओर झूके होते हैं।
7. **पोलैन्ड चायना** : इसका शरीर काले रंग के बालों से घिरा रहता है। परन्तू पैर, चेहरा पर पूँछ की छोर पर उजले रंग के बाल पाये जाते हैं।
8. **स्पौटेड पोलैंड चायना** : इसका शरीर उजले तथा काले रंग का चितकबरा होता है। कान मध्यम साईज के तथा आगे की ओर झूके होते हैं। रंग को छोड़कर अन्य मामलों में यह पोलैन्ड चायना के समान है।

प्रजनन व्यवस्था :–

70 प्रतिशत सूकरियॉ प्रायः रात में ही बच्चा देती है। अक्सर रात में बच्चा देते समय सूकरियॉ को अपना झाल खाने की सम्भावाना बढ़ जाती है। इसके खाने से सूकरियों के दूध प्रवाह कम हो जाता है जिसके चलते नवजात बच्चे की मृत्यु दर काफी बढ़ जाती है। अतः सूकरियों से दिन में बच्चे लेने के लिये उसे अनुमानित बच्चा देने के दो दिन पहले मांस में एक मि0ली0पी0जी0एफ0–2 अल्फा की सूई देनी चाहिये। ऐसा देखा गया है कि सूई देने के बाद करीब 80 प्रतिशत सूकरियॉ 20 से 30 घंटे के अन्दर में दूसरे दिन, दिन में बच्चे देती है। इससे सूकर पालकों को निम्न फायदे होते हैं :–

1. दिन में बच्चे देने से उसकी देख भाल अच्छी तरह करने से झाल खाने की संभावना बिलकुल समाप्त हो जाती है।
2. पी0जी0एफ0–2 अल्फा की सूई लगाने से सूकरियों को दूध प्रवाह बढ़ जाता है जिसके चलते उसके छौने स्वस्थ्य रहते हैं। फलस्वरूप छौनों की बढ़ोतरी अधिक एवं मृत्यू दर कम हो जाती है।
3. सूकरियॉ जल्द पाल खा जाती है जिसके चलते एक सूकरी से दो बार बच्चा आसानी से लिया जा सकता है लेकिन यदि सूकरी के बच्चे देने की अनुमानित तिथि मालूम नहीं हो तो इस सूई को नहीं देनी चाहिये अन्यथा सूकरी का गर्भपात हो जायेगा और फायदे के बदले नुकसान हो जायेगा। ऐसी हालत में **सूकरी को बच्चा देने के 12 घंटे के अन्दर इस सूई को मांस में देनी चाहिए ताकि सूकरी को दूध प्रवाह ज्यादा होने से बच्चे की बढ़ोतरी अधिक तथा मृत्यु दर कम की जा सके।**

सूकर प्रजनन से सम्बंधित कुछ ध्यान देने योग्य बातें :–

1. सर्वप्रथम पाल खिलाने की उम्र–8 से 9 माह
2. ऋतु चक्र–18 से 24 दिन
3. गर्म रहने का समय–2 से 3 दिन
4. पाल खिलाने का समय–गर्म शुरू होने का 12 से 30 घंटे के बीच
5. गाभिन रहने का समय – 112 से 116 दिन (3 माह, 3 सप्ताह, 3 दिन)
6. औसत कुल प्रजनन उम्र –6 से 8 वर्ष
7. बच्चे अलग करने के बाद सूकरियो को गर्म होने का समय– 5 से 15 दिन
8. दो वियानों के बीच का अन्तराल–6 से 7 माह
9. बच्चे देने की क्षमता – 8 से 15 बच्चे

सूकरी में गर्म होने के बाहरी लक्षण :–

1. अधिक बेचैन रहना।
2. एक दूसरे पर चढ़ना।
3. नर जैसा व्यवहार करना।
4. नर के प्रति ज्यादा आकर्षित होना।
5. अजीब तरह से बोलना।
6. दाना–चारा कम खाना।
7. नर सूकर द्वारा थूथने से धक्का देने पर चुपचाप खड़ी रहना।
8. योनि द्वार का लाल होना तथा उस पर सूजन आना।
9. योनि से साफ द्रव निकलना।
10. रूक–रूक कर पेशाब करना।

सूकरों का खाद्य एवं आवास प्रबंधन :–

पौष्टिक एवं संतुलित आहार की व्यवस्था–

सूकरों से पूरा फायदा उठाने के लिये उसके खान–पान पर विशेष ध्यान देनी चाहिए। संतुलित दाना मिश्रण बनाने के लिये विभिन्न प्रकार के अनाजों के अवशेषों , खल्लियों की निश्चित मात्रा लिया जाता है। इसमें समुचित मात्रा में खनिज लवण मिश्रण एवं विटामिन मिलाया जाता है। प्रत्येक श्रेणी के सूकरों के लिए अलग–अलग पोषकता के दाना मिश्रण बनाया जाता है। दो माह तक के बच्चों (10 किलो तक) को क्रीप मिश्रण दाना दिया जाता है। सूकरों के लिये अलग–अलग पोषकता के दाना मिश्रण बनाया जाता है। जिसमे प्रोटिन की मात्रा 20 प्रतिशत रहता है। 10 से 15 किलो वजन के सूकर का स्टार्टर तथा 15 से 50 किलो वजन के सूकर को ग्रोवर दाना दिया जाता है। जिसमें प्रोटीन की मात्रा क्रमशः 18 प्रतिशत तथा 16 प्रतिशत रहता है। फिनिशर दाना 50 किलो से ऊपर वाले सूकरों को देते हैं। जिसमें 14 प्रतिशत प्रोटीन होता है। निम्नलिखित दाना मिश्रण उपलब्ध आहारों से निम्न प्रकार के सूकरों के लिये तैयार किया जाता है।

आहार व्यवस्था :–

1. सूकर उत्पादन पर पूरे खर्च का लगभग 80 प्रतिशत उसके पोषण आहार पर पड़ता है। अतः सूकरों को पूर्णतः दाना मिश्रिण पर रखने से उत्पादन कीमत काफी बढ़ जाती है। इसलिए सूकर पालन को लाभकारी व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत सस्ते आहार की व्यवस्था करनी चाहिए।
2. छौने सूकर को विशेष आहार देकर उसे 8 सप्ताह के बदले 5 सप्ताह में भी अलग करें।
3. उर्जा स्रोत के लिए सूकरों को मकई के बदले सस्ते दर के महुआ या चावल की खुदी को भी खिलाया जा सकता है।
4. दाना मिश्रण में 50 प्रतिशत मकई को इमली के बीज से बदला जा सकता है।
5. दाना मिश्रण में 30 प्रतिशत तक मेहरा (चावल/महुआ का फरमेंटेड वेस्ट) को मिलायें।
6. दाना मिश्रण में महंगे मछली चूर्ण के बदले भूना हुआ सोयाबीन भी मिलाया जा सकता है।
7. होटलों की जूठन सामग्री पर सूकर पालकर दाना मिश्रण की तुलना में लगभग चार गुना अधिक लाभ कमाया जा सकता है।
8. सूकरों को हरी घास तथा चारा खिलाकर 30 प्रतिशत तक दाना मिश्रण की बचत करें।
9. सूकरों को हरा चारा चराने की व्यवस्था करनी चाहिए।

पोषक तत्वों की आवश्यकता :–

1. *उर्जा* – आहार में समूचित उर्जा होनी चाहिए। छोटे बच्चे दूध की वसा और लैक्टोज से उर्जा लेते हैं। बड़े होने पर सूकर अपने शरीरिक भार के अनुसार आहार में उर्जा की पूर्ति करते हैं। विभिन्न प्रकार के अनाज– मक्का, जौ, जई, ज्वार, गेहूँ उर्जा के अच्छे श्रोत है।
2. *प्रोटीन* – सूकरों में उम्र व वजन के अनुसार प्रोटीन की आवश्यकता होती है। सोयाबीन की खल्ली, मूँगफली की खल्ली, मछली का चूर्ण, मांस का चूर्ण प्रोटीन का मुख्य स्त्रोत है।

3. *खनिज लवण* – कैल्शियम व फास्फोरस की सूकरों में सबसे अधिक आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त आयरन, आयोडीन, कापर, जिंक तथा सेलेनियम की खून बनने बिमारियों से बचाव, प्रजनन एवं बढ़वार के लिए अत्यधिक आवश्यकता होती है। खनिज लवणों के लिए मिनरल मिक्सचर, नमक, अंड़ा का छिलका, चुना दिये जाते है। आजकल खनिज मिश्रण जिसमें सभी खनिज तत्व एवं विटामिन संतुलित मात्रा में होते हैं बाजार में तैयार मिलते हैं।
4. *विटामीन* – सूकरो में विटामिन ए, डी, ए एवं बी काम्पलेक्स की आवश्कता होती है।
5. *पानी* – सूकरों के लिए साफ पानी उपलब्ध रहना चाहिए। पानी की आवश्यकता सूकर के वजन पर, वातावरण के तापमान नमी पर और आहार की संरचना पर निर्भर करता है।

विभिन्न वर्गों के सूकरों के लिए संतुलित आहार :–

सूकर के पाचन तंत्र मनुष्य के पाचन तंत्र से मिलता जूलता है। अतः सूकर भी उन्ही आहारों को सबसे ज्यादा पसन्द करता है जो मनुष्य पसन्द करता है हालांकि सूकर हरा चारा भी कुछ हद तक खा सकता है।सूकर बेकार खादय पदार्थ जैसे रसोइघर का बचा खाना, खराब सब्जियाँ, हरा चारा आदि को महत्वपूर्ण पौष्टिक मांस में बदलने की अदभूत क्षमता है। इसके साथ ही ब्रायलर के बाद सूकर में भोजन को मांस में परिवर्तित करने की क्षमता अन्य मांस उत्पादित पशुओं की तुलना में सबसे अधीक है। सूकरों कि उत्पादन क्षमता को बरकरार रखने के लिए संतूलित आहार की उपलब्धता होनी चाहिए। सूकर के राशन में निम्नलिखित बातों का होना बहुत जरूरी है।

1. राशन उर्जा, प्रोटीन, विटामीन, खनीज मिश्रण आदि से संतुलित होनी चाहिए।
2. सूकरो को खाना स्वादिष्ट सुपाच्य तथा सूरक्षित हो।
3. सूकरो को राशन सस्ता तथा पौष्टिक हो।
4. राशन आसानी से उपलब्ध हो।

पिगलेट/छौनों के लिए आहार :–

पिगलेट जन्म लेने के साथ ही आहार ग्रहण करना शुरू कर देता है। इसका पहला आहार है, माँ का दूध जिसे खीस या कोलस्ट्रम कहते हैं। खीस पिगलेट की बीमारियों से बचाने के लिए प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करती है। साथ ही जन्म के समय प्रोटीन, खनिज लवण और दूसरे पोषक तत्वो की आवश्यकता को पूरी करता है।

छौने जन्म के बाद लगभग 2–3 सप्ताह की उम्र तक सिर्फ दूध पर ही निर्भर रहता है। अतः इस समय मादा सूकरी के खान–पान पर विशेष ध्यान की जरूरत होती हे जिससे की दूध के उत्पादन मे कमी न हो।

क्रीप राशन (2 से 3 सप्ताह के छौनें) :–

क्रीप राशन छौनो के लिए बहुत ही आवश्यक माना गया है। यह छौनों में बढने की गति को तेज तथा मृत्युदर को कम करता है। मादा सूकरी में दूध देने की क्षमता तीसरे सप्ताह से धीरे–धीरे कम होती जाती है। इसलिए यह आवश्यक है की 2–3 सप्ताह की उम्र से क्रीप राशन दिया जाए जिससे की छौनो की पौष्टिक आहार कि पूर्ति होने के साथ ही साथ मादा सूकरी को अधिक कमजोर होने से भी बचाता है। क्रीप राशन को प्रसूती गृह में बने क्रीप बाक्स मे डालकर देते हैं ताकि राशन तक सिर्फ छौने ही पहुँच पाये और इच्छानुसार खा सके। क्रीप राशन छौनो को 2 सप्ताह की उम्र से 8 सप्ताह की उम्र तक देते हैं तथा 8 सप्ताह के बाद मादा सूकरी को छौनों से अलग कर देते हैं। इसके बाद अलग किये गये बच्चों को स्टार्टर राशन पर रखते हैं।

स्टार्टर राशन (8 सप्ताह के छौने) :–

स्टार्टर राशन में प्रोटीन की मात्रा लगभग 18 प्रतिशत है। सूकर इस उम्र में तेजी से बढ़ते हैं। यह राशन तब तक दे। जब तक बढ़ते हुए छौनों का वजन लगभग 15 किलो का हो जाए।

ग्रोवर राशन :–

जब सूकर का बजन लगभग 15 किलो का हो जाता है तब उसे स्टार्टर दाना बंद करके ग्रोवर दाना शुरू करें। ग्रोवर राशन में प्रोटीन की मात्रा लगभग 16 प्रतिशत होनी चाहिए। इस समय ग्रोवर सूकर को 15–20 की संख्या में एक साथ रखा जा सकता है। यहाँ ध्यान देने की बात है की लगभग एक वजन के सूकर को एक साथ ही रखा जाए। ग्रोअर राशन पर सूकर को तब तक रख सकते हैं जबतक की उसका वजन 35 किलो का न हो जाए।

प्रजनन के लिए पाले जाने वाले सूकरों का आहार :–

प्रजनन हेतु पाली जाने वाले सूकरों के आहार पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। इनका आहार पौष्टिक तथा सीमित मात्रा में होनी चाहिए जिससे की सूकर में अधिक चर्बी नही होने पाये। इसके लिए इनको आहार के साथ–साथ हरा चारा भी दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त इनको चाराया जाना भी उचित है। इनके आहार में प्रोटीन की मात्रा 15–16 प्रतिशत होनी चाहिए।

प्रजनन हेतु नर का आहार :–

नर को इस तरह का आहार देना चाहिए जिससे की वे अधिक मोटे न हो पाये। इनके आहार मे हरे चारे कि व्यवस्था होनी चाहिए तथा चराया जाना भी उचित है जिससे की शरीर की चर्बी अधिक न हो पाये । 100–150 किलो बजन वाले नर के लिए 2.5–3.5 किलो दाना देना उचित है।

प्रजनन योग्य व्यस्क सूकरियों का आहार :–

नर के आहार की तरह मादा सूकरियों का आहार भी संतुलित व सही मात्रा में होनी चाहिए। बच्चे की संख्या निर्भर करता है कि प्रजनन के समय मादा सूकरी की शारीरिक स्थिति कैसी है, यदि प्रजनन के समय मादा काफी कमजोर है तो इस स्थिति में बच्चे की संख्या में कमी आ जाती है। अतः इस समय मादा सूकरी को लगभग एक सप्ताह तक पौष्टिक आहार देने के बाद जब शरीरीक स्थिति ठिक हो जाए तब ही प्रजनन करानी चाहिए। जिससे बच्चे स्वस्थ रहते हैं। तथा इनकी संख्या अधिक होती है और मादा में जन्म देने के बाद दूध का प्रवाह भी अधिक होता है।

अवयव	क्रीप स्टार्टर राशन	स्टार्टर राशन	ग्रोवर राशन	फिनिशर राशन
मकई दर्रा	63.00किलो	64.00किलो	65.00किलो	62.00किलो
मूंगफली की खल्ली	20.00 किलो	18.00 किलो	15.00 किलो	10.00 किलो
गेहूँ का चोकर	05.00 किलो	11.00 किलो	14.00 किलो	24.25 किलो
मछली का चूर्ण	07.25 किलो	06.25 किलो	05.25 किलो	03.00 किलो
स्कीम मिल्क पाउडर	04.00 किलो	–	–	–
नमक	1/2 किलो	1/2 किलो	1/2 किलो	1/2 किलो
मिनरल + विटामिन	1/4 किलो	1/4 किलो	1/4 किलो	1/4 किलो
कुल	100 किलो	100 किलो	100 किलो	100 किलो

फिनिशर राशन :–

इस अवस्था में सूकरो को बाजार में बेचने के लिए तैयार किया जाता हैं ये 7 से 8 महीने की उम्र होते हैं और इनका शारीरिक भार 35 से बढ़कर 70–75 कि0 ग्रा0 तक हो जाता है। इस आहार में केवल 12–14 प्रतिशत प्रोटीन की आवश्यकता होती है। 70–75 किलो तक के वजन वाले सूकरो को मांस के लिए बेचना ज्यादा लाभकारी होता है।

गर्भवती सूकरियों का आहार :–

गर्भवती सूकरियों में आहार पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। गर्भकाल के समय खान–पान पर ध्यान देने से बहुत लाभ होती है। जैसे–

1. बच्चे अधिक संख्या में मिलते हैं।
2. जन्म के समय बच्चे का स्वास्थ्य अच्छा रहता है।
3. मादा सूकरी का दूग्ध प्रवाह भी अधिक होता है।
4. मरे हुए बच्चे का कमजोर या अस्वस्थ बच्चे की संख्या कम होती है।
5. मादा से अलग करते समय भी बच्चे की संख्या अधिक होती है तथा बच्चा स्वस्थ होता है।

गर्भवती सूकरियों में आहार की मात्रा उसके उम्र, गर्भकाल और सूकरी के शरीरिक स्थिति पर निर्भर करता है। यह देखा गया है कि लगभग 2 किलो आहार प्रतिदिन देने पर बच्चे की संख्या एवं स्वास्थ्य काफी अच्छा रहता है।

बच्चा देने के समय और उसके बाद आहार व्यवस्था :–

जैसे–जैसे बच्चा देने का समय नजदीक आता जाता है, वैसे–वैसे सूकर पालक की सूकरीयों के खान–पान पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है। बच्चा देने के 4–5 दिन पहले से ही मादा सूकरी को मिलने वाली आहार की मात्रा को लगभग आधी कर देनी चाहिए। इस समय मिलने वाले आहार पौष्टिक तथा उर्जापूर्ण होनी चाहिए। बच्चा देने के दिन यह ज्यादा अच्छा है कि मादा सूकरी को कोई आहार न दे। लेकिन शुद्ध साफ पानी की व्यवस्था भरपूर होनी चाहिए।

बच्चा देने के बाद मादा सूकरी को अचानक अधिक खाना नही देनी चाहिए। अधिक खाना देने से अचानक दूध का प्रवाह बहुत अधिक हो जाता है। जिससे बच्चे में डायरिया होने का डर रहता हैं अतः जन्म के बाद मादा सूकरी का आहार पहले की तरह होनी चाहिए। तथा फिर धीरे–धीरे आहार की मात्रा बढ़ानी चाहिए।यह भी जरूरी है की मादा सूकरी को खाना से पूर्णतः संतुष्ट हो, ऐसा नही होने पर कभी–कभी सूकरी अपने बच्चे को भी खा सकती है।

अवयव	गर्भवती सूकरी	दुग्ध उत्पादित सूकरी	प्रजनन हेतु नर
मकई दर्रा	50	55	60
मूंगफली की खल्ली	18	15	20
चोकर	20	18	13
शिरा	5	5	–
मछली का चूर्ण	5	5	5
मिनरल मिक्सचर +विटामीन	1.5	1.5	1.5
साधारन नमक	0.5	0.5	0.5
कुल	100	100	100

दुग्ध देनेवाली मादा सूकरी की आहार व्यवस्था :–

बच्चे का भविष्य मुख्य रूप से मादा के दूध पर ही निर्भर करता है। और दूध का उत्पादन उचित खान–पान पर निर्भर करता है। अतः इस समय मादा सूकरी को संतूलित आहार के साथ–साथ समुचित मात्रा में आहार मिलनी चाहिए। आहार की मात्रा बच्चों की संख्या पर निर्भर करता है। अतः दूध देनेवाली सूकरी को प्रतिदिन 3.5 किलो तक दाना तथा इसके साथ 200 ग्राम आहार प्रति छौने बच्चे के हिसाब से देनी चाहिए। यानि यदि मादा सूकरी को 10 बच्चे हैं तो उसका आहार 3.5 + 2 किलो = 5.5 किलो होनी चाहिए, जिससे की मादा सूकरी तथा बच्चे स्वस्थ रहे।

सूकरो के रखरखाव एवं प्रबंधन :–

सूकर खराब रखरखाव एवं प्रबंधन से बहुत ज्यादा प्रभावित होते हैं क्योकि यह एक तेजी से बढ़ने वाला फॉर्म पशु है। अतः सूकर पालन को सफल बनाने तथा ज्यादा मुनाफा कमाने के लिये इसके क्रिया कलाप तथा रखरखाव को जानना एवं समझना अति आवश्यक हैं। विभिन्न पशुओं कि उम्र सधारणतः छोटी होती है। प्रत्येक फार्म पशुओं कि एक उम्र होती है उस समय तक उसकी उत्पादन क्षमता कम होती जाती है। मादा सूकरी में बच्चा देने की क्षमता उम्र बढ़ने के साथ बढ़ती जाती है और 3–4 वर्ष की उम्र में यह क्षमता सबसे अधिक होती है। इस उम्र के बाद धीरे–धीरे उत्पादन क्षमता घटती जाती है। अतः किसी सूकरी को फार्म में उसी समय तक रखनी चाहीए जब तक बच्चा देने की क्षमता बरकरार रहे इसके बाद पूराने को नए सूकरी से बदल देनी चाहिए।

सूकरी का नियंत्रण :–

सूकर फार्म में सूकरो को नियंत्रित करने कि आवश्यकता हमेशा पड़ती है जैसे घावों को साफ–सफाई एवं दवा लगाने के समय दवा खिलाने के समय टिकाकरण आदि के समय ताकि कार्य करने वाले की किसी तरह की परेशानी ना हो।

छोटे सूकर को नियंत्रित करने में कुछ खास परेशानी नहीं होती हैं इसे पिछले पैर के जोड़ के उपर पकड़ कर नियंत्रित किया जा सकता है।

बड़े सूकर को नियंत्रित करने के पहले उसके स्वभाव के बारे में जानना जरूरी है और थोड़ा सावधान भी रहना चाहिए। इसके बाद एक रस्सी जो थोड़ी लम्बी हो लेकर उसका फिसलने वाला फंदा बनाते है इस फंदे को सूकर के उपरी जबड़े में दांत के पिछे फंसाकर कस देते हैं जिससे सूकर नियंत्रित हो जाता है इसके बाद रस्सी के दूसरे छोर को किसी मजबूत खूँटे में बाँधकर दवा, इंजेक्शन, टिकाकरण आदि कर सकते हैं।

रोग एवं निदान :–

1. सूकर के चर्म रोग के निदान के लिए निम्न घरेलू उपचार किया जा सकता है–महुआ तेल/करंज तेल 50 मी0 ली0, नीम तेल 50 मी0 ली0, गंधक 10 ग्राम एवं कपूर 10 ग्राम का मिश्रण बनाकर लगावें।
2. सूकर ज्वर एवं खुरहा मुँहपका का टीका प्रतिवर्ष लगावें।
3. बच्चा देने वाली सूकरी को बच्चा देने के एक माह पहले जोंक का दवा (अलबेंडाजोल) वजनानुसार पशु चिकित्सक से सलाह लेकर दें।
4. खाने के समय पशुओं का निरीक्षण आवश्व करना चाहिए क्योंकि खाने के समय बीमार पशु की पहचान तुरन्त की जा सकती है।

सूअरों में ऐरिसिपैलास –

सूअरों में ऐरिसिपैलास रोग एक संक्रामक जीवाणु–जनित रोग है। इस रोग की विशेषताएँ सैप्टिसीमिया, त्वचा, हृदय व शरीर के जोड़ों में चिरकालिक विकार होना हैं। त्वचा पर लाल चकत्ते पड़ जाते हैं, जिससे त्वचा, हीरे के समान और सूजन भरी हो जाती है।

कारण –

इस रोग का कारण एक छोटा सिलेन्डर–नुमा, गतिविहीन, ग्राम पोजीटिव किन्तु आसानी से वर्णीकृत होने वाला विभिन्न आकारों का जीवाणु होता है जो ऐरिसिपेलोथ्रिक्स रूजियोपैथी नाम से जाना जाता है। यह छोटा, पतला, लम्बा व दण्डाकार होता है। अतः इन्हें दण्डाणु भी कहा जाता है। यह यदाकदा जोड़े तथा समूहों में मिलता है।

यह जीवाणु सामान्य तापमान पर कई महीनों तक नहीं मरता व 90^0 सेग्रे0 तापमान पर यह 5 से 10 मिनट में मर जाता है, परन्तु सड़े हुए मांस अथवा मांस के अचार में यह कई महीनों तक जीवित रहता है। क्षारीय मिट्टी में यह जीवाणु गर्मी के दिनों में वृद्धि करता है। मरकरी–बाई–क्लोराइड, फॉर्मेलीन, क्रैसाल तथा फीनॉल से यह जीवाणु शीघ्र ही मर जाता है।

रोग की व्यापकता–

इस रोग का संक्रमण सूअरों में समस्त विश्व में होता है। यह रोग सूअरों के अतिरिक्त भेड़ एवं बटेर में भी देखा गया है।

इस सूक्ष्मजीव का प्रसार मिट्टी, खाद्य–पदार्थ तथा जल द्वारा होता है जो संक्रमित प्राणियों के मल पदार्थो तथा मूत्र से प्रदूषित हो जाते हैं। सतही जल भी इस रोग का संचरण, एक पशुपालन केन्द्र से दूसरे पशुपालन केन्द्र तक कर सकता है। चिरकारी रोगग्रस्त सूअर काफी समय तक संक्रमण के स्त्रोत बने रह सकते हैं। मनुष्यों में इस सूक्ष्मजीव का संक्रमण पैकिंग संयंत्र में कार्य करने वाले तथा पशु उत्पादों का रख–रखाव करने वाले मनुष्यों तक ही सीमित होता है।

यद्यपि सूअरों में यह रोग किसी भी उम्र में हो सकता है, किन्तु 3 से 6 माह की उम्र के युवा सूअर इस रोग के प्रति अत्यधिक सुग्राही होते हैं। हाल ही में ब्याहने वाली मादा सूअर भी रोग के प्रति सुग्राही होती है। रोगग्रस्त पशु ठीक होने के बाद यद्यपि स्वस्थ दिखाई देते हैं, किन्तु वे काफी समय तक रोग–वाहक बने रह सकते हैं तथा जीवाणु उत्सर्जित करते रहते हैं।

लक्षण– इस रोग के लक्षण तीव्र, कम–तीव्र तथा चिरकालिक प्रकार के होते हैं :–

तीव्र प्रकार–

इस प्रकार के रोग के लक्षण मुख्यतः बुखार (105^0 सेंटीग्रेड से अधिक), सुस्ती, दूध पीने वाले बच्चों में दस्त तथा वृद्ध सूअरों में कब्ज आदि हैं। पशु चलने की इच्छा नहीं करता है तथा चलने पर दर्द महसूस करता है। रोगग्रस्त पशुओं को ठंड लगती है। नाक तथा कान की लॉर हल्के पीले रंग की जो जाती है। अगर पशु जीवित रहता है तो उसके पूरे शरीर की त्वचा पर छोटे, अलग–अलग तथा गुलाबी रंग के धब्बे दिखाई देते हैं। पूरे शरीर पर पित्ती जैसी क्षतियाँ दिखाई देती हैं जो लाल, गुलाबी अथवा हल्के पीले रंग की अथवा चौकोर आकार की हो सकती है। इसी कारण इस रोग को त्वचा की हीरे जैसी बीमारी भी कहते हैं।

कम तीव्र प्रकार–

इसमें बुखार तथा चारा न खाना तीव्र प्रकार की तरह ही लक्षण पाए जाते हैं, किन्तु वे अधिक समय तक नहीं रहते। पशु चौन्ना होता है तथा छेड़ने पर चलने लगता है। मल भी सामान्य होता है। पशु के पूरे शरीर पर पित्ती की क्षतियाँ फैली हुई होती हैं।

चिरकालिक प्रकार–

यह अवस्था तीव्र अथवा कम–तीव्र अवस्थाओं के बाद देखी जाती है, किन्तु कभी–कभी पशु झुण्डों में संक्रमण के बिना किसी पूर्व इतिहास के जोड़ों में सूजन के लक्षण देखे जाते हैं। पशुओं की त्वचा में पित्ती की क्षतियाँ होती हैं। कान की लर, पूँछ तथा पैरों के खुर नष्ट होकर गिर जाते हैं। तथा पशु लंगड़ा हो सकता है। हृदय में दीवार या वाल्व पर कोशिकाओं व ऊत्तकों के बढ़ने से एक बड़े आकार की गाँठ जैसी बन जाती है, जिसे वेजीटेटिव एन्डोकॉर्डाईटिस कहते हैं।

विकृति–

यह जीवाणु शरीर में मुँह द्वारा अथवा त्वचा द्वारा प्रवेश करता है। जब पशु की प्रतिरोधी क्षमता कम हो जाती है। तो यह टॉन्सिल अथवा आँतों से होता हुआ रक्त में पहुँच कर वृद्धि करता है, जिससे पशु में सेप्टिसीमिया उत्पन्न हो जाता है। त्वचा के माध्यम से जाने वाले दण्डाणु भी लसीका मार्ग से होते हुए रक्त में पहुँच जाते हैं। जीवाणु कुछ जीव–विष भी उत्पन्न करता है, जो रक्त–वाहनियों की दीवार को नुकसान पहुँचाता है। इसी कारण त्वचा में पित्ती उभर आती है तथा विभिन्न अंगों मे रक्तस्त्राव देखे जाते हैं। तिल्ली तथा लसीका गाँठों के आकार में वृद्धि का भी यही कारण है। कुछ पशुओं में सेप्टिसीमिया खत्म हो जाता है तथा जीवाणु त्वचा में स्थिर होकर छोटी रक्तवाहनियों में थक्के बनाकर थ्रौम्बोसिस उत्पन्न करता है, जिससे त्वचा पर हीरे के आकार की क्षतियाँ बन जाती हैं। यह जीवाणु शरीर के जोड़ों तथा हृदय के वाल्व में भी स्थिर हो सकता है। इस रोग की तीव्र अवस्था में क्षतियाँ रक्तवाहनियों में नुकसान पहुँचने के कारण होती हैं, जिससे उदर के नीचे शोध तथा दयावरण व प्लूरो में रक्तस्त्राव तथा सीरम फाइब्रेरी निःस्त्राव देखे जाते हैं। आमाश्य, आँतों एवं मूत्राशय के ऊपर रक्तस्त्राव के चिन्ह पाये जाते हैं। रक्तस्त्राव आंत्र शोथ भी मिल सकता है। आंत्रयोजनी लसीका–ग्रथियाँ आकार में बड़ी होती हैं। जिगर भी आकार में बड़ा होता है तथा इसमें रक्ताधिक्य होता है। फेफड़े शोथ युक्त होते हैं। गुर्दो के सम्पुट के नीचे रक्तस्त्राव देखे जाते हैं। तिल्ली का आकार रक्ताधिक्य एवं रेटीकुलर कोशिकाओं के कारण बढ़ जाता हैं। चिरकालिक अवस्था में शरीर के जोड़ों में संधिशोथ देखा जाता है, जिसमें द्रव की मात्रा भी बढ़ जाती है। हृदय की दीवार में अधिकतर बड़े व आकृति में गोभी के फूल जैसे ऊत्तक मिलते हैं, जिसके परिणामस्वरूप हृदय के अन्दर के छिद्र संकरे हो जाते हैं। इसी कारण फेफड़ो में चिरकारी शिरा रक्ता धिक्य व शोथ की क्षतियाँ देखी जाती है।

निदान–

इस रोग का निदान निम्नलिखित विधियों से कर सकते हैं :–

1. रोग का इतिहास, लक्षण तथा शव परीक्षण क्षतियों के आधार पर। हालाँकि इस आधार पर इस रोग का निदान बहुत महत्वपूर्ण नहीं है, चूंकि समान लक्षण कुछ अन्य रोगों में भी मिलते हैं।
2 शरीर के सभी अंगों, एक या अनेक संधियों तथा त्वचा की क्षतियों से जीवाणु के पृथक्कीकरण करने के बाद पहचान कर।
3. चिरकालीन संक्रमण के निदान में सीरम परीक्षण जैसे, प्लेट एग्लू–टीनेशन परीक्षण का महत्व होता है।
4. पशु इनोकुलेशन द्वारा सफेद चूहे अथवा कबूतर प्रयोग किए जाते हैं।

उपचार–

इस रोग का ईलाज पेनिसिलीन तथा ऐन्टी ऐरीसिपेलस सीरम द्वारा किया जाता है है। अक्सर पेनिसिलीन को इस ऐन्टीसीरम में मिलाकर देते हैं। सीरम को अधोत्वचा अथवा अंतः माँसपेशी विधि द्वारा भी दिया जा सकता है। चिरकारी प्रकार के रोग में स्थायी परिर्वतन हो जाने से कोई भी उपचार लाभकारी नहीं होता हैं। कभी–कभी संधिशोध होने पर कोर्टीकोस्टीरॉइड देने से कुछ लाभ हो सकता है।

बचाव एवं रोकथाम–

रोग का उन्मूलन लगभग असंभव है। रोग से बचाव हेतु सामान्य स्वास्थ्य संबंधी सावधानियाँ बरतनी चाहिए। रोगग्रस्त पशुओं को तुरन्त ही नष्ट कर देना चाहिए। नये खरीदे हुए पशुओं को झुण्ड में मिलाने से पूर्व, कुछ दिनों तक अलग रखना चाहिए तथा उनमें संधिपोथ एवं अंतः हृदयशोध के लक्षणों की पूरी तरह जाँच कर लेनी चाहिए। चूँकि कुछ पशु स्पष्ट रूप से स्वस्थ दिखाई देते हैं, किन्तु रोगवाहक के रूप में कार्य करते रहते हैं। अतः यह विधि भी बहुत अधिक संतोषजनक नहीं होती है। पशुशाला की सफाई तथा तीव्र विसंक्रमकों का प्रयोग भी प्रभावकारी

होता है। किन्तु यह पूर्ण रूप से रोग नियंत्रण नहीं कर पाते हैं। उपरोक्त परेशानियों के कारण इस रोग से बचाव हेतु सीरम तथा टीकों का काफी प्रचलन है। रोग फैलने की अवस्था में, सम्पर्क में आने वाले अन्य पशुओं को उम्र के अनुसार 5 से 20 मि0 ली0 ऐन्टीऐरिसि–पैलास सीरम देकर, एक–दो सप्ताह तक बचाया जा सकता है। इस रोग से बचाव हेतु अब कुछ टीके भी उपलब्ध हैं, जिनका प्रयोग रोग नियंत्रण में किया जा सकता है।

जन स्वास्थ्य पर प्रभाव–

मनुष्यों में भी यह रोग हो सकता है। इस सूक्ष्मजीव का संक्रमण पैकिंग संयंत्र में कार्य करने वाले तथा पशु–उत्पादों का रख–रखाव करने वाले मनुष्यों तक ही सीमित है। क्षतियाँ अक्सर हाथों तथा बाहों तक ही सीमित रहती है। इनमें प्रभावित अंगों में लालिमा युक्त सूजन, जलन, दर्द, फफोले तथा घाव देखे जाते हैं।

सूकर ज्वर – सूकरों में सबसे ज्यादा मृत्यु सूकर ज्वर के कारण होता है। इसमें 3 से 5 दिनों के अन्दर सारे सूकर मर जाते हैं। इसका मुख्य लक्षण तीव्र बुखार, खाना छोड़ देना, पेड़ के इर्द–गिर्द घुमना तथा बेचैन रहना है। इससे बचने का एक मात्र सरल ऊपाय **सूकर ज्वर का टीकाकरण** करायें जिसकी मात्रा सभी व्यस्क को 1 मिली0 तथा छोटे सूकर (छौने) को आधा मिली0 की मात्रा में पैदा होने के बाद देते है। व्यस्कों को प्रति वर्ष दिसम्बर से जनवरी के बीच यह टीका जरूर देना चाहिए। इसकी प्रतिरोधक क्षमता 1 वर्ष की होती है। **अतः प्रति वर्ष इसे अवश्य दें।**

पिगलेट एनिमिया– सूकरियों के दूध में आयरन नामक खनिज कम मात्रा में होता है। सूकर के छौनों को दूध से केवल एक मि0 ग्रा0 आयरन प्रतिदिन ही मिलता है जबकि खून बनाने के लिए 6–8 मि0 ग्रा0 आयरन प्रतिदिन की आवश्यकता होती है। इस कारण सूकर के बच्चे 3–4 दिन में ही खून की कमी (एनीमीया) के शिकार हो जाते हैं। इससे बचने के लिए 3 दिन की उम्र में 100–200 मि0 ग्रा0 आयरन का इंजेक्सन दिया जाना चाहिए। इसके अलावा फेरस, सल्फेट और कापर सल्फेट का घोल मादा के स्तन के पास तथा सूकरो के रहने के स्थान पर छिड़कना चाहिए जिससे पर्याप्त मात्रा में छौने आयरन की पूर्ति कर लेते हैं।

लाभदायक सूकर पालन के लिए ध्यान देने योग्य बातें :–

1. सूकर गृह का एक तिहाई भाग में बंद एवं दो तिहाई भाग खुला आंगन होना चाहिए।
2. सूकरों के लिए आवास की व्यवस्था में इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि ये साफ–सुथरे एवं हवादार हो।
3. सूकर घर का जमीन पक्का करके सूकर पालन से ज्यादा आमदनी प्राप्त किया जा सकता है। कच्चा जमीन पर सूकरों की कभी नहीं रखना चाहिए।
4. 4–10 सप्ताह मे नर बच्चे का जिन्हें प्रजनन के लिए नहीं रखना है। बधिया कर देनी चाहिए।
5. गर्भवती सूकरी को बच्चा देने के कम से कम 10 दिन पहले प्रसूति गृह के अकेले रख देना चाहिए।
6. प्रसूति गृह में गार्ड रेल एवं क्रीप बाक्स की व्यवस्था होनी चाहिए।
7. सूकरी से दिन में बच्चा देने के लिए उसे अनुमानित समय से 48 घंटे पहले एक मी0 ली0 P.G. F2 - Alfa की सूई मॉस में लगा देनी चाहिए। इससे सूकरी का दूध प्रवाह भी बढ़ जाता है। तथा बच्चे की अधिक बढ़ोतरी एवं मृत्यु दर कम हो जाती है।
8. बच्चा देने के बाद सूकरी झाल गिराती है जिसे तुरन्त प्रसव गृह से निकाल देना चाहिए।
9. सभी सूकरों को छ महिनें के अन्तराल पर **अन्तः कृमि नाशक दवाई "एलबेन्डाजोल"** का प्रयोग करें। इसके बाद एक सप्ताह के लिए लिवर टॉनिक **"लिव– 52"** या **"लिवोसीन"** या **"ब्रोटॉन"** का प्रयोग करें। इससे इन पशुओं में होने वाली आधी बीमारियों का रोकथाम निश्चित तौर पर हो जाता है।
10. सूकरों में **खुरहा चपका** नामक बीमारी प्रायः हो जाया करती है। इससे बचने के लिए **एफ0एम0डी0** नामक टीका (1 मिली0) का प्रयोग करते है।

नमक पाशुओं के लिए वरदान–

प्राचीन काल से ही मनुष्यो और पशुओं के आहार में नमक के समावेश की प्रथा रही है। पहले शायद इसका वैज्ञानिक कारण पशुपालकों को अज्ञान रहा हो, पर आज यह सर्वविदित है कि नमक (सोडियम क्लोराईड) लवण–तत्वों का स्रोत है। शरी में सोडियम क्लोराईड की कमी से रक्त–तंत्र कार्य करना बन्द कर सकता है। यह एक सफेद, दरदरा, पानी में घुलनशील, प्राकृतिक रूप से शरीर की कोशिका द्रव्य में पाया जाने वाला पदार्थ है जो शरीर के ऑसमोसिक दबाव को बनाये रखने के लिए आवश्यक है। इसके साथ ही, नमक एक मसाला भी है। मसाले की भाँति इसके उपयोग से शरीर–क्रिया संबंधी समर्थन मिलता है, क्योंकि इसके अंतर्ग्रहण के लार–स्राव का उद्दीपन होता है तथा डायास्टेसी–एन्जाइमों की सक्रियता में वृद्धि होती है। सोडियम क्लोराईउ लवण शरीर में निम्नलिखित कार्य करते हैं :–

1. पशु शरीर के अम्लसार संतुलन को नियन्त्रित करना ।
2. कोशिकाओं की उदासीनता बनाये रखना।
3. कोशिकाओं के पोषण और भोजन के पाचन में सहायता करना।
4. माँसपेशियों के संकुचन एवं कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन व वसा के उपापचय में सहायता करना।

सूकर का बाड़ा –

सूकरों के बाड़ों का क्षेत्रफल 4x2.5 मी रखें। अधिकतम शरीर भार वृद्धि व उत्तम आहार परिवर्त्तन क्षमता के लिए सूकर घर का तापक्रम करीब 24° से. होना चाहिए। गर्मी से बचाने के लिए उनके ऊपर पानी के छिड़काव (Sprinkler, Wallows) की व्यवस्था होनी चाहिए और Wallow के दोनो ओर चढ़ने और उतरने के लिए ढाल वाला खुरदरा फर्श हो। सूकर घर के पास छायादार पेड़ लगाने चाहिए। जाड़े के दिनों में सूकर शावकों का उचित तापक्रम (32°से.) रखने के लिए प्रसूतिगृह में बिजली के हीटर या इन्फ्रारेड किरण वाले लैम्प या साधारण बिजली के 100 वाट के बल्ब का प्रबंध करना चाहिए। गेहूँ का भूसा या धान की पुआल को फर्श पर बिछाना चाहिए। सूकर का घर हवादार रखिए।

तलक्षेत्र (Floor Area) की आवश्यकता सूकर समूहों, शरीर भार तथा जलवायू पर निर्भर करती है। जिसका विवरण नीचे दिया गया है।

जीवित भार (कि.ग्रा.)	तलक्षेत्र प्रति सूकर (मीटर^2)	नाद की लम्बाई (से.मी.)
12 – 16	0.4	15
17 – 23	0.4	17
24 – 50	0.5	21
51 – 70	0.7	25
71 – 100	0.8	30
100 – से ऊपर	1.0	35
मादा	1.5	50
मादा शावकों के लिए	10.00	

©सर्वाधिकार सुरक्षित

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें–

जी० वी० टी० – कृषि विज्ञान केन्द्र
चकेश्वरी फार्म, गोड्डा – 814133
फोन:– 9304603506, 9939498711

आभार : डा० अंजनी कुमार (निदेशक, भा० कृ० अनु० प०– अटारी, जोन– IV, पटना), डॉ० विनोद कुमार सिंह (निदेशक, भा० कृ० अनु० प०– क्रीडा, हैदराबाद), श्री राजीव कुमार कंसल (मुख्य कार्यकारी अधिकारी–जी० वी० टी०, नोएडा), जी० वी० टी०–के० वी० के०, गोड्डा एवं भा० कृ० अनु० प०– अटारी, जोन– IV, पटना

टाईम प्रेस, गोड्डा, मो0– 9931120405